चेंजिंग वेज
Changing Ways
पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं. HP/DMA/113
(साप्ताहिक)
❑ वर्ष 01 ❑ अंक 20 ❑ पृष्ठ : 04 ❑ मूल्य : 4 रुपये | धर्मशाला, 25 जुलाई 2016 | हर सोमवार को प्रकाशित

सस्ते ईलाज के प्रयास में हैं कई बाधाएं

गरीब जनता तक सस्ती दवाओं को पहुंच बनाने के लिए हिमाचल प्रदेश सरकार ने एक प्रशंसनीय प्रयास शुरू किया है। इसके तहत डॉक्टरों द्वारा लिखे जाने वाले ईलाज का ऑडिट करने का प्रबंध किया गया है। डॉक्टरों पर नजर रखने के लिए बाकायदा एक फारमेट जारी किया गया है। इसमें मरीज की पर्ची का ऑडिट/प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट करके नंबर दिए जाने की व्यवस्था है। ऑडिट में औसत से कम नंबर आने पर संबंधित डॉक्टर को नोटिस जारी करके जवाबतलबी भी की जाएगी। फिलहाल इसे महंगे ईलाज की व्यवस्था को तोड़कर मरीजों को ब्रांडेड दवाओं की लूट और अनावश्यक ईलाज प्रक्रिया से मुक्ति दिलाने का प्रारंभिक प्रयास माना जा सकता है, क्योंकि अभी भी ऑडिट की व्यवस्था पुख्ता नहीं है। इस संबंध में पड़ताल की गई तो पता चला कि सस्ते ईलाज के सरकारी प्रयासों के बावजूद अभी भी कई बाधाएं और खामियां मौजूद हैं। अस्पतालों में रोजना आने वाले हजारों मरीजों में से किसी एक की पर्ची के आधार पर डॉक्टरों और ब्रांडेड दवा कंपनियों और निजी लैब की सांठगांठ को तोड़ना संभव नहीं है।

इसके अलावा आम जनता में भी दवाओं व उचित ईलाज को लेकर जागरूकता नहीं है। हमारे देश में डॉक्टर को भगवान माना जाता है और हर कोई डॉक्टर की बात को आंख बंद करके मानता है। वैसे भी जिस देश में प्रति मरीज डॉक्टरों की संख्या अंतरराष्ट्रीय औसत के मुकाबले काफी कम है, तो वहां डॉक्टर की बात मानने के अलावा दूसरा चारा नहीं होता। इसके अलावा ज्ञान की कमी के कारण भी जेनरिक या सस्ती दवाओं को लेकर लोगों के मन में उचित धारणा नहीं है। महंगी व ब्रांडेड वस्तु को ही अच्छी माने जाने की प्रथा भी जेनरिक दवाओं के प्रति लोगों की सोच को निम्न स्तर पर रखे हुए है। हालांकि हम अपने पिछले अंक में अपने पाठकों को जेनरिक दवाओं के बारे में फैली भ्रांतियों और इसके फायदों के बारे में विस्तृत जानकारी दे चुके हैं। अब हम सरकार के प्रयासों के बावजूद जेनरिक दवाओं तक हर आदमी की पहुंच न बन पाने के कारणों का विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं।

जेनरिक दवाओं को लेकर गलत धारणा

हिमाचल प्रदेश में जेनरिक दवाओं और सस्ते ईलाज को लेकर प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बावजूद अभी भी अधिकतर मरीज जेनरिक दवाओं की मांग नहीं करते। अगर डॉक्टर जेनरिक दवा लिख भी देता है तो इसे सस्ती व कम असरकारक दवा मान कर इसे लेने की जरूरत नहीं समझी जाती और ब्रांडेड दवा ही खरीदने पर अपेक्षाकृत बीस फीसदी अधिक रकम उड़ा दी जाती है। इसका कारण जेनरिक दवा के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी भी है। जेनरिक दवाओं में ब्रांडेड दवाओं के बराबर ही साल्ट मौजूद होने के बावजूद आम आदमी को इस बात का पता ही नहीं होता कि ये दवाएं ब्रांडेड दवाओं की तरह ही असरकारक हैं। उपभोक्तावाद के चलते जेनरिक दवाओं की ताकत प्रचार व प्रसार की कमी के कारण दब कर रह गई है।

पौधरोपण ▪▪▪

धर्मशाला के नजदीक सिद्धबाड़ी में पौधरोपण करते गुंजन संस्था के कर्मचारी, निदेशक संदीप परमार व अन्य।

डॉक्टर की न मानें तो करें क्या

सरकार के दबाव के बावजूद कई डॉक्टरों पर इसका कोई असर नहीं देखा गया है। एक सीनियर डॉक्टर ने इस संबंध में लेकर की गई बातचीत में माना कि अगर कोई डॉक्टर मरीज के मन में यह बात डाल दे कि अगर सस्ती दवाई चाहिए तो बढ़िया ईलाज की गारंटी नहीं है। ऐसे में मरीज के लिए उसकी बात मानने के अलावा कोई चारा नहीं होगा। फिर सरकार के प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट रिपोर्ट जैसे प्रयास विफल हो जाएंगे। अगर ऐसी पर्ची को पकड़ कर कार्रवाई भी शुरू की गई तो मरीज खुद गवाही दे देगा कि ब्रांडेड दवा उसने ही लिखवाई है। लिहाजा बिना किसी कानूनी प्रावधान के महंगी दवाओं के जाल से मरीज को बाहर निकालना मुमकिन नहीं है। हां मरीज को इनके प्रति जागरूक बनाकर जरूर कुछ हल निकल सकता है।

सरकारी खरीद में भी गड़बड़

सरकार ब्रांडेड दवाओं के खेल से मरीजों को बचाने के लिए डॉक्टरों की पर्ची तक तो पहुंच बनाने में जुटी है, मगर सरकारी दवा खरीद में इस खेल को नहीं रोक सकी है। अभी भी अस्पतालों में खरीदी जाने वाली दवाओं में अधिकतर सप्लाई ब्रांडेड कंपनियों की महंगी दवाओं की ही होती है। ब्रांडेड दवा कंपनियां कमीशन के खेल में डॉक्टरों को ही नहीं बल्कि सरकारी दवा खरीद में शामिल कर्मियों व अधिकारियों तक को शामिल किए हुए हैं। हैरानी की बात है कि हिमाचल में खोले गए जनऔषधी केंद्रों तक से खरीद नहीं की जाती। प्रदेश में जन औषधी केंद्र फेल होने का बड़ा कारण यह भी है। डॉक्टरों के पर्ची पर जेनरिक दवा न लिखे जाने की मार झेल रहे ये केंद्र सरकारी खरीद भी न के बराबर होने के चलते विफल हो गए। अब महज चुनिंदा बड़े अस्पतालों में ही ये केंद्र सांस लेते नजर आते हैं। अभी भी इनसे दवा खरीदने में सौतेला व्यवहार किया जाता है। कारण वही कमीशन के खेल का है। सरकार भी इनसे खरीद आवश्यक बनाने के प्रावधान नहीं कर पाई है। जेनरिक दवाएं भी ब्रांडेड कंपनियों से खरीदी जाती हैं।

सरकार जागरूक करे तो बने बात

सरकारों ने जेनरिक दवाओं के जरिये ईलाज को सस्ता करने की मुहिम तो शुरू कर रखी है, मगर इनके प्रति फैली या फैलाई जा रही गलत धारणा को समाप्त करने के लिए मरीजों को जागरूक करने का कोई कदम नहीं उठाया है। अगर स्वास्थ्य महकमा या सरकार अपने प्रचार संसाधनों से अपने नागरिकों को जेनरिक दवाओं और अन्य प्रकार के अनावश्यक उपचार के प्रति जागरूक करे तो इसका व्यापक असर देखा जा सकता है। कई बार तो जानकारी के अभाव में मरीज खुद डॉक्टर को जेनरिक के बजाय कोई अच्छी व असरकारक दवा लिखने की बात करके उनके मन की मुराद पूरी कर देता है।

डॉक्टरों की जांच के लिए फॉरमेट जारी

सस्ते ईलाज को लेकर सीएमओ कांगड़ा डॉ. आरएस राणा से बात की गई तो उन्होंने बताया कि प्रदेश सरकार ने डॉक्टरों को सस्ती जेनरिक दवाएं लिखने के साथ ही अन्य अनावश्यक टैस्ट व जरूरत से ज्यादा दवाएं न लिखने को लेकर जरूरी दिशानिर्देश जारी किए हैं। इसके तहत प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट रिपोर्ट का फॉरमेट बनाकर सभी बीएमओज को भेजा गया है। निर्देश दिए गए हैं कि वे किसी भी मरीज की पर्ची स्कैन करके संबंधित डॉक्टर का ऑडिट करें और इस फॉरमेट में दिए गए 12 बिंदुओं पर जांच करके नंबर दें। फॉरमेट में दिए गए 12 विषयों

की जांच पर प्रत्येक विषय पर दो नंबर दिए जाने का प्रावधान है। इन नंबरों के आधार पर रैशनल, सेमी-रैशनल और ईरैशनल परसेंटेज निकाली जाएगी। इरेशनल अंक लेने वाले डॉक्टरों को नोटिस जारी करके इसका कारण पूछा जाएगा और आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। सीएमओ कांगड़ा ने बताया कि फिलहाल प्रत्येक मरीज की पर्ची का ऑडिट करने की व्यवस्था नहीं है। जांच अधिकारी किसी भी मरीज की पर्ची लेकर उसका ऑडिट करेगा। उन्होंने कहा कि कोई भी मरीज डॉक्टर द्वारा लिखे गए अनावश्यक ईलाज की शिकायत सीधे संबंधित क्षेत्र के बीएमओ या फिर सीएमओ या जिला स्वास्थ्य अधिकारी से कर सकता है। इसके लिए उनके मोबाइल नंबर पर व्हाट्सएप के जरिये शिकायत व पर्ची भेजी जा सकती है।

सीएमओ ने बताया कि अधिकतर अस्पतालों के अंदर से ही जरूरी दवाएं लिखने का प्रावधान किया गया है। उन्होंने बताया कि जोनल अस्पताल से लेकर पीएचसी स्तर पर 56 जरूरी दवाओं का स्टॉक उपलब्ध है। इनमें महंगी से महंगी दवाएं भी शामिल हैं। उन्होंने बताया कि दवा खरीद के लिए सरकार ने पर्याप्त फंड मुहैया करवा रखे हैं। वहीं इन दवाओं को रखने के लिए प्रत्येक पीएचसी में 165 लीटर का फ्रीज भी रखने को निर्देश जारी किए गए हैं, ताकि जरूरी दवाओं में इसमें सुरक्षित रखा जा सके। वहीं जेनरिक दवाओं की सरकारी खरीद के संबंध में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि अस्पतालों द्वारा मांगी गई दवा की खरीद का निर्णय परचेज कमेटी की बैठक में होता है। सरकार की गाइडलाइन के अनुसार ही दवा खरीदी जाती है।

इस नंबर पर करें शिकायत

सीएमओ कांगड़ा ने कहा कि अगर किसी मरीज को डॉक्टर द्वारा महंगी दवाएं लिखे जाने या गैर जरूरी टैस्ट करवाए जाने की शिकायत है तो वह उनके मोबाइल नंबर [illegible] पर या फिर जिला स्वास्थ्य अधिकारी के मोबाइल नंबर [illegible] पर व्हाट्सएप के जरिए पर्ची व शिकायत भेज सकता है। इसके अलावा अपने क्षेत्र के बीएमओ से भी शिकायत कर सकता है।

■ ***हर पर्ची का ऑडिट हो तो बने बात***

सरकार ने मरीज की पर्ची का ऑडिट करने का बढ़िया निर्णय लिया है, मगर अभी भी प्रत्येक पर्ची का ऑडिट करने की व्यवस्था नहीं बन पाई है। इस आधार पर कुछ एक डॉक्टरों पर तो नजर रखी जा सकती है, सभी पर नहीं। वैसे भी डॉक्टरों की तरफ से यह बात सामने आई है कि अगर वे फॉरमेट के आधार पर दिए गए 12 विषयों के अनुरूप पर्ची पर जानकारी लिखेंगे तो जरूरत से ज्यादा मरीजों की जांच नहीं हो पाएगी।

...शैतानी की आयतें

प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने बुरहान वानी की मौत पर अफसोस जाहिर करते हुए कहा था कि उन्हें इस समाचार से गहरा सदमा पहुंचा है। नवाज शरीफ के इस वक्तव्य से साफ है कि पाकिस्तान कश्मीर में आतंक का नंगा नाच करा रहा है और आतंक फैलाने वाले उसके ही भाड़े के टट्टू हैं। बुरहान वानी भी पाकिस्तान के इशारे पर काम कर रहा था। वह हिजबुल का कमांडर था और इस आतंकी संगठन को पाकिस्तान की सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आईएसआई का खुला समर्थन है। पाकिस्तान ने कश्मीर का मुद्दा फिर संयुक्त राष्ट्र संघ में उठाया और इस पर भारत ने उसे खरी-खोटी भी सुनाई। संयुक्त राष्ट्र भारत के स्थाई प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन ने पाकिस्तान को आतंक का मोहल्ला बताते हुए कहा कि आतंक इस देश की स्टेट पॉलिसी है और आतंक फैलाना इसका धर्म।

-चंद्र शर्मा

कुरान में शैतान को अल्लाह और मोहम्मद से ज्यादा चालाक बताया गया है क्योंकि शैतान कहीं अधिक कुटिल होता है। मगर शैतान इंसानियत को लहू-लुहान करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। वह किसी भी हाल में अल्लाह और पैगम्बर नहीं बन सकता। यही बात शैतानी पाकिस्तान पर सटीक बैठती है। भारत के आंतरिक मामले में दखल देना तो पाकिस्तान की फितरत बन गई है। पड़ोस में अमन-चैन से रहने की बजाय शैतानी पाकिस्तान, खुद भी आतंक की आग में झुलस रहा है और भारत को भी इसकी लपटों से जलाने की हर संभव कोशिश कर रहा है। भारत पड़ोसी धर्म निभाने की लाख कोशिश कर ले, पाकिस्तान अपनी शैतानी फितरतों से बाज आने से रहा। आतंकी हिंसा में झुलस रही कश्मीर घाटी में आग में पेट्रोल डालने की मंशा से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने पहले कैबिनेट की विशेष बैठक बुलाई और फिर 19 जुलाई को ब्लैक डे मनाने का ऐलान कर डाला।

प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने बुरहान वानी की मौत पर अफसोस जाहिर करते हुए कहा था कि उन्हें इस समाचार से गहरा सदमा पहुंचा है। नवाज शरीफ के इस वक्तव्य से साफ है कि पाकिस्तान कश्मीर में आतंक का नंगा नाच करा रहा है और आतंक फैलाने वाले उसके ही भाड़े के टट्टू हैं। बुरहान वानी भी पाकिस्तान के इशारे पर काम कर रहा था। वह हिजबुल का कमांडर था और इस आतंकी संगठन को पाकिस्तान की सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आईएसआई का खुला समर्थन है। पाकिस्तान ने कश्मीर का मुद्दा फिर संयुक्त राष्ट्र संघ में उठाया और इस पर भारत ने उसे खरी-खोटी भी सुनाई। संयुक्त राष्ट्र भारत के स्थाई प्रतिनिधि सैयद अकबरुद्दीन ने पाकिस्तान को आतंक का मोहल्ला बताते हुए कहा कि आतंक इस देश की स्टेट पॉलिसी है और आतंक फैलाना इसका धर्म।

पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय मंच पर बार-बार कश्मीर में जनमत संग्रह कराने की मांग करता है। भारत और पाकिस्तान के बीच अब तक जितनी भी संधियां या समझौते हुए हैं, सभी में कश्मीर समस्या को आपस में बातचीत करके सुलझाने पर सहमति हो रखी है, मगर पाकिस्तान संधि के फौरन बाद पलट जाता है। निःसंदेह, कश्मीर के हालात सामान्य नहीं है और घाटी की अमन पसंद अवाम पर अलगाववादी और पाकिस्तानी पिट्ठू हिंसक माहौल थोप रहे हैं। पर्यटन मेहनतकश कश्मीरियों की रोजी-रोटी का प्रमुख साधन है। हिंसा के माहौल में अवाम की कमाई का एकमात्र जरिया भी जाता रहा है। इन दिनों घाटी में पर्यटन सीजन चल रहा था मगर अलगाववादियों ने हिंसा का तांडव फैलाकर, इसे बर्बाद कर दिया। और जो तत्व लोगों की रोजी-रोटी ही छीन लें, वे अवाम के सबसे बड़े दुश्मन होते हैं। पाकिस्तान कश्मीर में अपनी बेजा हरकतों से बाज नहीं आएगा और न ही इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाने से पीछे हटेगा। इस जमीनी सच्चाई का ख्याल करते हुए ही भारत को अपनी रणनीति तय करनी होगी।

जम्मू-कश्मीर से आतंकियों का जड़ से सफाया करना भारत की पहली प्राथमिकता है। सरकार इस दिशा में काम भी कर रही है, मगर सियासी हित इसमें आड़े आ रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में आतंक को जड़ से मिटाने के लिए अवाम का भरपूर सहयोग जरूरी है। जब तक आतंकियों को स्थानीय लोगों का समर्थन रहेगा, सुरक्षा बलों को बड़ी सफलता नहीं मिल पाएगी। बुरहान के मामले ने फिर यह बात साफ कर दी है। कश्मीर को केंद्र से उदार वित्तीय मदद मिलती रही है मगर यह पांच फीसदी भी पात्र आदमी तक नहीं पहुंचती है। भ्रष्ट नौकरशाही और बिचौलिए बीच में ही इसे हजम कर जाते हैं। इसलिए, सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि केंद्र से भेजी गई सौ फीसदी मदद पात्र तक पहुंचे। राज्य में बड़े पैमाने पर रोजगार का सृजन करने की जरूरत है ताकि युवाओं को बुरहान वानी बनने से रोका जा सके। सरकार अगर कश्मीर की अवाम का दिल जीत लेने में कामयाब हो जाती है तो पाकिस्तान को भाव दिखाने की गुंजाइश ही नहीं रहेगी। वैसे भी शैतान का उसकी आयतों से ही खात्मा किया जा सकता है।

अपने लक्ष्य पर विश्वास कायम रखें

एक बार कुछ विज्ञानिकों ने एक बड़ा ही रोचक प्रयोग किया। उन्होंने 5 बंदरों को एक बड़े से बाड़े में बंद कर दिया और बीचों-बीच एक सीढ़ी लगा दी। इस सीढ़ी के ऊपर केले लटका दिए गए थे। जैसा की माना जा रहा था, वैसा ही हुआ। जैसे ही एक बंदर की नज़र केलों पर पड़ी वह उन्हें खाने के लिए दौड़ा। पर जैसे ही उसने कुछ सीढ़ियां चढ़ीं उस पर ठंडे पानी की तेज धार डाल दी गई और उसे उतर कर भागना पड़ा। पर विज्ञानिक वहीं नहीं रुके, उन्होंने एक बंदर के किये गए की सजा बाकी बंदरों को भी दे डाली और सभी को ठंडे पानी से भिगो दिया। बेचारे बंदर हक्के-बक्के एक कोने में दुबक कर बैठ गए।

पर वे कब तक बैठे रहते, कुछ समय बाद एक दूसरे बंदर को केले खाने का मन किया और वह उछलता कूदता सीढ़ी की तरफ दौड़ा। अभी उसने चढ़ना शुरू ही किया था कि पानी की तेज धार से उसे नीचे गिरा दिया गया। और इस बार भी इस बंदर की गुस्ताखी की सज़ा बाकी बंदरों को भी दी गई। एक बार फिर बेचारे बंदर सहमे हुए एक जगह बैठ गए।

थोड़ी देर बाद जब तीसरा बंदर केलों के लिए लपका तो एक अजीब वाक्या हुआ। बाकी के बंदर उस पर टूट पड़े और उसे केले खाने से रोक दिया, ताकि एक बार फिर उन्हें ठंडे पानी की सज़ा ना भुगतनी पड़े। अब प्रयोगकर्ताओं ने एक और रोचक चीज़ की। उन्होंने अंदर बंद बंदरों में से एक को बाहर निकाल दिया और एक नया बंदर अंदर डाल दिया।

नया बंदर वहां के नियम क्या जाने। वह तुरंत ही केलों की तरफ लपका। पर बाकी बंदरों ने झट से उसकी पिटाई कर दी। उसे समझ नहीं आया कि आखिर क्यों ये बंदर खुद भी केले नहीं खा रहे और उसे भी नहीं खाने दे रहे हैं। खैर उसे भी समझ आ गया कि केले सिर्फ देखने के लिए हैं खाने के लिए नहीं।

इसके बाद प्रयोगकर्ताओं ने एक और पुराने बंदर को निकाला और नया अंदर कर दिया। इस बार भी वही हुआ नया बंदर केलों की तरफ लपका पर बाकी के बंदरों ने उसकी धुनाई कर दी और मज़ेदार बात ये है कि पिछली बार आया नया बंदर भी धुनाई करने में शामिल था, जबकि उसके ऊपर एक बार भी ठंडा पानी नहीं डाला गया था।

इस प्रयोग के अंत में सभी पुराने बंदर बाहर जा चुके थे और नए बंदर अंदर थे जिनके ऊपर एक बार भी ठंडा पानी नहीं डाला गया था। सभी बंदर नए होने के बावजूद उनका व्यवहार भी पुराने बंदरों की तरह ही था। वे भी किसी नए बंदर को केलों को नहीं छूने देते, जबकि इनमें से किसी को भी यह मालूम नहीं था कि पुराने बंदरों ने ऐसा क्यों किया था। दोस्तो हमारे समाज में भी ये व्यवहार देखा जा सकता है। जब भी कोई नया काम शुरू करने की कोशिश करता है, चाहे वह पढ़ाई, खेल, एंटरटेनमेंट, व्यापार, राजनीति, समाजसेवा या किसी और क्षेत्र से संबंधित हो, उसके आस-पास के लोग उसे ऐसा करने से रोकते हैं। उसे विफलता का डर दिखाया जाता है।

और मज़ेदार बात ये है कि उसे रोकने वाले अधिकतर लोग वे होते हैं जिन्होंने खुद उस क्षेत्र में कभी हाथ भी नहीं आजमाया होता है। इसलिए यदि आप भी कुछ नया करने की सोच रहे हैं और आपको भी समाज या आसपास के लोगों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है तो थोड़ा संभल कर रहिये। अपने तर्क और हिम्मत की सुनिए। खुद पर और अपने लक्ष्य पर विश्वास कायम रखिये और बढ़ते रहिये।

जानिए रात को क्यों गाने लगा मीठू तोता

प्रेरक प्रसंग

एक तोता था मीठूराम। पिंजरा ही मीठूराम का घर था और वही उसकी दुनिया। मीठूराम की आवाज बड़ी अच्छी थी पर वह सिर्फ रात को ही गाता था।

एक रात जब मीठूराम गाना गा रहा था तो उधर से एक चमगादड़ निकला। चमगादड़ ने देखा कि मीठूराम की आवाज बहुत ही मीठी है तो उसने पूछा कि क्यों भई तुम्हारी आवाज इतनी मीठी है तो तुम सिर्फ रात को ही क्यों गाते हो।

मीठूराम ने इसकी वजह बताते हुए कहा कि एक बार जब मैं जंगल में दिन के समय गाना गा रहा था तो एक शिकारी उधर से निकला। उसने मेरी आवाज सुनी और उसी कारण उसने मुझे पकड़ लिया। तबसे अभी तक मैं इस पिंजरे में कैद हूं।

यह बताकर मीठूराम बोला कि इसके बाद से मैंने यह सीख लिया कि दिन में गाना मुसीबत का कारण बन सकता है और इसलिए अब मैं रात को ही गाता हूं। यह सुनकर चमगादड़ बोला कि मित्र यह तो तुम्हें पकड़े जाने से पहले सोचना चाहिए था।

सच भी है कि कई बार हम गलतियां करने के बाद ही उससे कुछ न कुछ सीखते हैं। पर जरूरी नहीं है कि हर बार सीखने के लिए गलती ही की जाए। कई मर्तबा किसी काम को करने से पहले कुछ सावधानियां बरत कर हम गलतियों से बच सकते हैं और नुकसान से भी। तो याद रखिए बुद्धिमान वही होता है जो सोच-विचार कर काम करता है।

जिस समय जिस काम के लिए प्रतिज्ञा करो ठीक उसे उसी समय पर करना चाहिए नहीं तो लोगों का विश्वास उठ जाता है।

-स्वामी विवेकानंद

पाठकों के लिए

विभिन्न सामाजिक, साहित्यिक एवं धार्मिक विषयों पर सभी प्रबुद्ध पाठकों के लेख, लघु कथाएं तथा कविताएं आमंत्रित हैं।

—हमारा पता—
संपादक,
चेंजिंग वेज, गुंजन भवन, तपोवन रोड बीपीओ सिद्धबाड़ी, धर्मशाला जिला कांगड़ा (हि.प्र.)-176057
Mail : badalfrahain@gmail.com

प्राकृतिक कृषि का प्रणेता है कुरूक्षेत्र का गुरूकुल

-अजय पाराशर

कुरूक्षेत्र स्थित गुरूकुल की आधारशिला सन् 1912 में 13 अप्रैल को कर्मयोगी एवं स्वतंत्रता सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा रखी गई थी। इसकी स्थापना के लिए थानेसर के लाला ज्योति प्रसाद ने 1048 बीघा ज़मीन तथा 10,000 चांदी के सिक्के स्वामी श्रद्धानन्द को भेंट किए थे। समय के थपेड़ों को सहता हुआ गुरूकुल आज 104 साल का हो चुका है। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के साथ पूरे देश भर में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके गुरूकुल ने आज से क़रीब दस वर्ष पूर्व प्राकृतिक या ऋषि खेती की ओर अपने कदम बढ़ाए थे। आज यह पूरे उत्तर भारत में प्राकृतिक कृषि के प्रणेता के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल हो रहा है। गुरूकुल के पूर्व प्राचार्य आचार्य देवव्रत, जो वर्तमान में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल हैं, की अगुवाई में गुरूकुल ने लगभग एक दशक पहले प्राकृतिक कृषि की ओर कदम बढ़ाए थे। आज गुरूकुल की कुल 175 एकड़ कृषि योग्य भूमि में से क़रीब 125 एकड़ भूमि को ऋषि खेती से जोड़ा जा चुका है। आने वाले समय में शेष भूमि को भी प्राकृतिक कृषि के तहत लाने की योजना है।

गुरूकुल को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलवाने में आचार्य देवव्रत का विशेष योगदान रहा है। सन् 1981 में जब उन्होंने गुरूकुल का कार्यभार ग्रहण किया था, तब न ही गौशाला और न ही कृषि के हालात अच्छे थे। गौशाला में कहने को तो 160 गाएं थीं लेकिन दूध की मात्रा केवल 20 से 25 लीटर प्रतिदिन ही थी। उन्हें लगा कि यदि दूध की मात्रा बढ़ानी है तो उनके आवास और चारे की व्यवस्था उत्तम होनी चाहिए। उन्होंने पहले कम से कम 10 लीटर दूध देने वाली 10 गायों को गौशाला में स्थान दिया। इसके साथ संस्था में इन गायों को लाभकारी बनाने के लिए निरन्तर शोध किया जाता रहा। इस वक़्त गौशाला में क़रीब 200 गायें हैं, जिनमें से 125 गायें देशी नस्ल की हैं। आज गौशाला में गर्मी के मौसम में लगभग 1050 लीटर और सर्दियों में 1200 लीटर दूध का उत्पादन होता है। ख़ास बात यह है कि गर्मियों में भी देश के अन्य हिस्सों के मुक़ाबले दूध के उत्पादन कोई अधिक गिरावट नहीं आती है। गौशाला में मौजूदा भारतीय गौ नस्लों में हरियाणा देशी, साहीवाल, थारपारकर, राठी तथा गीर के अतिरिक्त अमेरिकन हॉस्टन फ्रिजन शामिल हैं। भारतीय नस्लों में अधिकतम दूध की मात्रा 28 लीटर जबकि विदेशी नस्ल में 75 लीटर प्रतिदिन है।

इन गायों के लिए वातानुकूलित गौशाला की व्यवस्था की गई है। उनके लिए वातानुकूलित गौशाला के अतिरिक्त गर्मियों की तपन से राहत देने के लिए तालाब का भी निर्माण किया गया है। पहले गौशाला में अधिक कर्मचारियों की आवश्यकता होती थी और चारा कटाई तथा दूध निकालने में अधिक समय लगता था। लेकिन नवीन यंत्रों के प्रयोग से अल्पावधि में ही चारा उपलब्ध होने के साथ गायों से निकालने जाने वाले दूध में पूर्ण स्वच्छता सुनिश्चित करने में मदद मिली है। इसके अतिरिक्त गोबर गैस से संचालित होने वाले 25 तथा 75 किलोवाट के दो विद्युत् जनरेटर स्थापित किए गए हैं। गोबर गैस का उपयोग भोजन तैयार करने के लिए भी किया जाता है। संपूर्ण गुरूकुल को प्रकृति हितैषी बनाने के लिए सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए गए हैं। यहां प्राकृतिक खेती में काम आने वाला गौ-मूत्र एवं जल मिश्रण प्लांट भी स्थापित किया गया है।

केवल गुरूकुल को ही हरा-भरा नहीं बनाया गया है बल्कि संपूर्ण कुरूक्षेत्र में भी हरियाली को बढ़ावा देने के लिए पौधशाला स्थापित की गई है। इस पौधशाला में स्थानीय परिवेश के अनुसार 300 प्रजातियों के पौधे हर समय उपलब्ध रहते हैं। क्षेत्र में हरियाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रति वर्ष हजारों फलदार पौधे लोगों को निःशुल्क उपलब्ध करवाए जाते हैं।

गुरूकुल के प्रांगण में स्थित गौशाला के समीप प्राकृतिक खेती की रीढ़ माने जाने वाले घन जीवामृत बनाने के लिए प्लांट स्थापित किया गया है। यहां बनाए गए एक शैड में केंचुआ खाद बनाने की व्यवस्था की गई है। जीवामृत बनाने के लिए देशी गाय का दस किलो गोबर, पांच से दस लीटर देशी गाय का मूत्र, एक से दो किलो गुड़ या चार लीटर गन्ने का रस या एक लीटर पके नारियल का पानी या 10 किलो गन्ने के छोटे कटे टुकड़े या 10 किलो देशी ज्वार के पौधों के टुकड़े या एक किलो मीठे फल जैसे चीकू, आम, अमरूद, केला, पपीता, खिन्नू आदि का गूदा, एक किलो मूंग या उड़द या तुअर या चने का आटा, जीवयुक्त मुट्ठी भर मेंड़ या जंगल की मिट्टी और 200 लीटर पानी प्रयोग किया जाता है। दो सौ लीटर क्षमता के लोहे के बैरल या प्लास्टिक टैंक या सिमेंट की टंकी के निचले तले में छेद कर उसमें प्लास्टिक की नली और कॉक लगाने के बाद 200 लीटर पानी डाला जाता है। पानी में गोबर, गोमूत्र, मीठे पदार्थ, आटा और जीव मिट्टी डालने के उपरान्त इसे लकड़ी से घोला जाता है। इस घोल को दो से तीन दिन छाँव में सड़ने के लिए रखा जाता है। हर दिन में दो बार (सुबह-शाम) लकड़ी से बाएं से दाएं या क्लॉकवाइज दिशा में दो मिनट के लिए चक्राकार घुमाने के बाद इसे जूट के बोरे से ढक दिया जाता है। जीवामृत बनाने के बाद इसे सात दिनों के भीतर उपयोग में लाना अनिवार्य है। यहां घन जीवामृत लड्डू या सूखा घन जीवामृत भी बनाया जाता है।

इसी तरह प्राकृतिक खेती में काम आने वाले बीजामृत बनाने के लिए देशी गाय का गोबर पाँच किलो, पांच लीटर देशी गाय का मूत्र, चूना 50 ग्राम, 100 किलो बीजों के लिए 20 लीटर पानी या गन्ने के बीज के लिए 50 लीटर पानी और खेत के मेंढ़ की मुट्ठी भर मिट्टी काम में लाई जाती है।

प्राकृतिक खेती की तकनीक से लकदक 125 एकड़ ज़मीन में आज धान, गन्ना, अरबी, भिंडी, घीया, ककड़ी सहित अन्य सब्जियों आदि की खेती की जा रही है। यहां कृषि फार्म के प्रवेश मार्ग पर उन्नत किस्म के आंवले के पौधे भी लगाये गये हैं। गुरूकुल में अध्ययनरत् छात्रों तथा आगतों के लिए प्राकृतिक खेती से प्राप्त अन्न ही परोसा जाता है। गुरूकुल के प्रांगण में प्राकृतिक खेती पर आधारित जूस तथा फलों का केन्द्र भी स्थापित किया गया है।

उप निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय,
सूचना एवं जन संपर्क विभाग,
धर्मशाला, जिला-कांगड़ा,
पिन-176215 (हि.प्र.)

हकीकत बन गया बूरा सपना

एचआईवी पीड़ित की आत्मकथा

मेरे कमरे की तरफ आ रही पैरों की आहट अचानक मुड़ी और धीरे-धीरे फिर दूर होती चली गई और इसके साथ ही मेरी उम्मीद भी। तीन दिन से भूखी प्यासी इस कमरे में बंद थी और न जाने कितनी और देर रहूँगी, शायद मर ही जाऊं बीच में यही सोचते-सोचते एक बार झपकी भी लग गयी थी लेकिन सपना ऐसा आया कि नींद उड़ गयी, मैंने देखा कि ऊंचे-नीचे पहाड़ी रास्तों पर चलते-चलते शाम घिर आई है और मुझे दूर-दूर तक कोई इंसान या आबादी नहीं दिखाई दे रही है। अंधेरा घिरने लगा है और मैं डर कर तेज चलते- चलते दौड़ने लगी हूँ। भागते-भागते थक गयी हूं पर जंगल खत्म होने को ही नहीं आ रहा है, रात होने लगी है और आसपास की काली अंधेरी झाड़ियों से हिंसक जंगली पशुओं की लाल-लाल आंखें अंगारों कि तरह मुझे जला रही हैं, मैं और तेज भागना शुरू कर देती हूँ, मेरी टांगें और फेफड़े मेरा साथ नहीं दे रहे हैं पर मैं हांफती हुई भागती जा रही हूँ कि तभी एक भारी भरकम जानवर मेरे ऊपर कूद पड़ा, डर से मेरी घिग्घी बंध गयी और आंख खुल गयी। तो यह सपना था मैंने राहत की सांस ली और अपना पसीना पोंछा, लेकिन दिल उसके बाद भी बहुत देर तक धड़कता रहा। अब तो भूख भी बरदाश्त के बाहर हो चली थी।

तीन दिन पहले सुबह सवेरे ही तो बहस शुरू हो गयी थी, मुझे पढ़ने देने की या मेरा ब्याह कर यहां से टाल देने की। और तो और मां भी कैसी पत्थर दिल हो गयी थी, हर बार की तरह इस बार एक बार मनाने तक नहीं आई मुझे, अब तो लगता है कि सबके साथ मां भी यही सोचने लगी है कि ब्याह के लायक हो गयी है शादी करके पीछा छुड़ाओ। अचानक बड़ी थकान और कमज़ोरी सी हो आई, चौथी से लेकर आठवीं तक हर साल मैंने यही लड़ाई इतनी ही शिद्दत से लड़ी है। बापू ने तो चौथी कक्षा में ही मेरी सगाई दूसरे गांव के विजय सिंह से कर दी थी, यह तो मैं ही थी जो हर साल लड़-लड़ कर आगे पढ़ती जा रही थी लेकिन इस साल यह मामला गंभीर हो गया था। मैं, यानि सल्मा 16 की हो चली थी और बिरादरी और लड़के वालों का दबाव भी था कि इस साल मेरी शादी कर ही दी जाए। सो बापू का हुक्म हो गया था कि पढ़ाई-लिखाई बंद। वैसे भी गांव से 10-12 किलोमीटर दूर ऊंचे नीचे पहाड़ी रास्तों वाले स्कूल में भला कौन मां-बाप अपनी लड़की पढ़ने भेजते, उस पर कि गांव से कोई दूसरी लड़की वहां पढ़ने नहीं जा रही थी। मेरा कई दिनों से रो-रोकर बुरा हाल था।

-क्रमशः

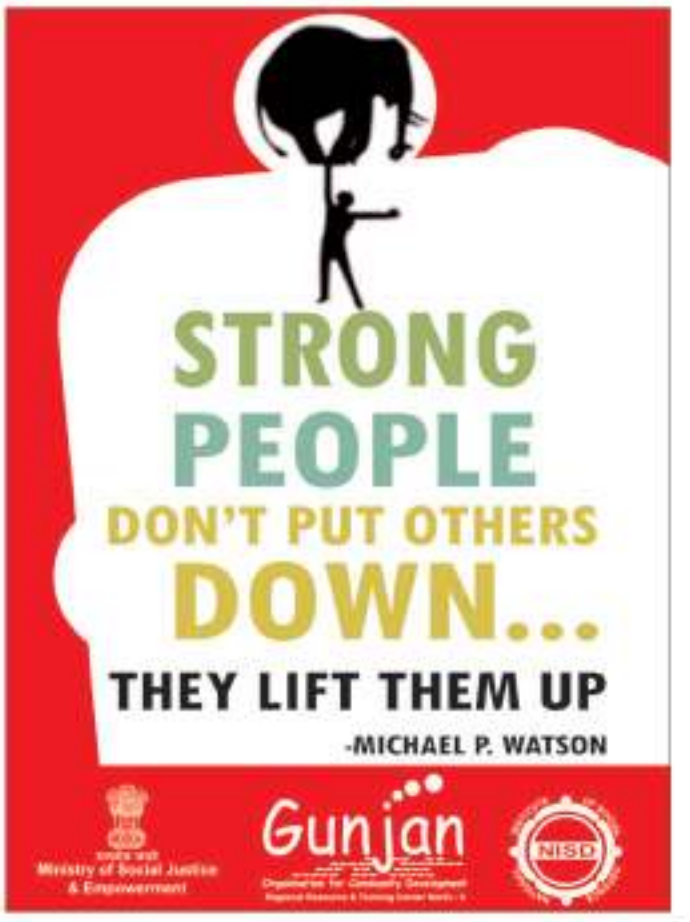

चेंजिंग वेज
Changing Ways
धर्मशाला, 25 जुलाई 2016

भारत समर्थक ही बनेगा अमेरिका का राष्ट्रपति

अमेरिका और भारत के साझा इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार भारत के प्रति झुकाव रखने वाले हैं।

डेमोक्रेट हिलेरी भारत से भावनात्मक तौर पर जुड़ी हुई हैं तो रिपब्लिकन ट्रंप राजनीतिक-रणनीतिक तौर पर भारत के समर्थक हैं। इसकी शुरुआत तो काफी पहले हुई थी, लेकिन ओबामा से पहले राष्ट्रपति रहे जार्ज बुश ने तेजी से बदलती दुनिया को समझा और चीन की कीमत पर भारत से संबंध बढ़ाए। इसे मोदी और ओबामा ने भी जारी रखा। अब बारी ट्रंप और हिलेरी की है।

भारत के करीब अमेरिका

अब से पहले तक पाकिस्तान को समर्थन देनेवाला अमेरिका चीन के बढ़ते कद से परेशान हो गया था। खासकर, सोवियत संघ के पतन और शीतयुद्ध के खात्मे के बाद पाकिस्तान एक बोझ-सा बन गया था। इसी के बाद इस्लामिक आतंकवाद का वैश्विक जन्म हुआ और भारत के करीब अमेरिका होता चला गया।

ट्रंप ने भी भारत को बताया दोस्त

शुरू में डोनाल्ड ट्रंप की छवि अमेरिका में भारतीय कर्मचारियों के प्रति बयान देकर नकारात्मक बन गई थी। उन्होंने नौकरी को लेकर भारतीयों पर टिप्पणी की थी कि वो राष्ट्रपति बने तो भारत को बेरोजगार कर देंगे, लेकिन धीरे-धीरे उनके रुख में बदलाव होने लगा। खासकर, बदलती परिस्थितियों और इस्लामिक आतंकवाद के संबंध में भारत को लेकर उनकी सोच बदलने लगी। चीन के बढ़ते कद ने ट्रंप को भारत समर्थक बनने पर मजबूर कर दिया।

हिलेरी को पसंद है भारत, नरम है रुख

हिलेरी क्लिंटन उस वक्त से भारत के करीब हैं जब उनकी पति बिल क्लिंटन ने भारत का दौरा किया था। यह गुजरे जमाने की बात है कि तब के चुनाव में भारतीय मूल के लोगों ने बिल का समर्थन किया था।

अपने पहले दौरे में भी बिल और हिलेरी भारतीय संस्कृति के दीवाने हो गए थे। तब के भारतीय पीएम अटल बिहार वाजपेई की विद्वता ने भी दोनों को काफी प्रभावित किया था। उसके बाद से लेकर आज तक क्लिंटन दंपत्ति को भारत से लगाव है। किसी न किसी कार्यक्रम में भाग लेने बिल और हिलेरी भारत आते ही रहे हैं। ओबामा के पहले कार्यकाल में जब हिलेरी विदेश मंत्री बनीं तब भी उनका भारत के प्रति लगाव दिख ही जाता था। हम कह सकते हैं कि यह लगाव भावनात्मक हो चुका है।

इस्लामिक आतंकवाद और चीन पर ट्रंप के विचार मिले

डोनाल्ड ट्रंप कथित इस्लामिक आतंकियों के घोर विरोधी हैं। उन्होंने कई बार अमेरिका में इस्लाम के बैन को लेकर बयान दिया है। साथ ही चीन के प्रति अमेरिका और भारत के रवैए में समानता के साथ ने भी ट्रंप को भारत के प्रति झुकाया है। ट्रंप ने एक बार राष्ट्रपति बनने पर चीन को सीधा करने का बयान भी दिया है।

ट्रंप ने घोषणा-पत्र में भारत को सराहा

रिपब्लिकन पार्टी ने कहा, 'भारत हमारा भू-राजनीतिक सहयोगी और एक रणनीतिक व्यापारिक साझेदार है। इसकी जनता की गतिशीलता और इनके लोकतांत्रिक संस्थानों का स्थायित्व इस देश को न सिर्फ एशिया में बल्कि पूरे विश्व में नेतृत्व की स्थिति में लेकर आ रहा है।'

भारत से बढ़ाएंगे साझेदारी

इसमें कहा गया, 'हम इस बात की पुष्टि और घोषणा करते हैं कि भारत हमारा भू-राजनीतिक सहयोगी है। एक रणनीतिक व्यापारिक सहयोगी है। हम भारत को ज्यादा विदेशी निवेश और व्यापार की मंजूरी देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हम पूरे भारत के धर्मों के अनुयायियों की सुरक्षा की अपील करते हैं।'

फिट रहना है तो गाय को रखना होगा खुश

आम धारणा है कि गाय का दूध स्वास्थ्य के लिहाज से सर्वोत्तम होता है, लेकिन यदि आप अपने परिवार वालों को और अधिक पौष्टिक दूध देना चाहते हैं, तो पहले यह सुनिश्चित कर लें कि आप जिस गाय के दूध का सेवन करते हैं, वह खुश रहती है या नहीं। चौंकिए नहीं, एक ताजा अध्ययन में यह रोचक खुलासा किया गया है कि गाय जब खुश होती है तो कहीं अधिक पौष्टिक दूध देती है और उसके दूध में कैल्शियम का स्तर अधिक होता है। अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि हाल ही में बच्चे को जन्म देने वाली एक जर्सी गाय को नियमित तौर पर प्रसन्नता प्रदान करने वाला रसायन भोजन में दिया गया, तो उसके दूध में कैल्शियम का स्तर बढ़ गया।

एक शोध पत्रिका जर्नल ऑफ एंडोक्राइनोलॉजी में प्रकाशित यह अध्ययन डेयरी कारोबारियों के लिए गायों के स्वास्थ्य में सुधार और दूध उत्पादन में निरंतरता बनाए रखने में सहायक साबित हो सकता है।

पौष्टिक दूध और दूध के अन्य उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ी है। लेकिन तेजी से बढ़ती इस मांग का खामियाजा गायों को भुगतना पड़ता है, क्योंकि डेयरी में पाली

जाने वाली अधिकतर गायों के रक्त में कैल्शियम का स्तर कम पाया जाता है।

अमेरिका के विस्कॉन्सिन-मेडिसन विश्वविद्यालय की लौरा हर्नांडीज के नेतृत्व में अनुसंधानकर्ताओं की टीम ने प्रसन्नता के अनुभव के लिए जिम्मेदार रसायन सेरोटोनिन के सेवन का गायों के रक्त और दूध में कैल्शियम के स्तर से संबंधों की जांच की।

अनुसंधानकर्ताओं की टीम ने 24 गर्भवती गायों को एक रसायन, इंजेक्शन के जरिए दिया, जो बाद में सेरोटोनिन में परिवर्तित हो जाता है। सेरोटोनिन के कारण सभी गायों के रक्त और दूध में कैल्शियम का स्तर बढ़ गया। हालांकि सभी नस्ल की गायों में इसका असर एक जैसा नहीं रहा। हर्नांडीज ने कहा, दो नस्लों की गायों पर किए गए इस अध्ययन में हमें पता चला कि कैल्शियम स्तर में परिवर्तन दोनों नस्लों में अलग-अलग रहा।

शुरू हुआ देश का पहला ई-कोर्ट

हैदराबाद उच्च न्यायालय परिसर में देश का पहला ई-कोर्ट शुरू हो गया है। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति मदन बी. लोकुर ने ई-कोर्ट का उद्घाटन करते हुए

कहा कि तेलंगाना और आंध्र प्रदेश देश के ऐसे पहले दो राज्य हैं जिन्हें एकीकृत आपराधिक न्याय प्रणाली (आईसीजेएस) योजना के लिए चुना गया। दोनों राज्यों की प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में की गई प्रगति का उल्लेख करते हुए न्यायमूर्ति लोकुर ने कहा कि आईसीजेएस एक ऐसी प्रणाली है जो पुलिस थानों, अदालतों, जेलों, अभियोजन पक्ष और फोरेंसिक साइंस प्रयोगशालाओं सभी को आपस में जोड़ देगी। सर्वोच्च न्यायालय की ई-कमिटी के अध्यक्ष और हैदराबाद में खुले देश के इस पहले ई-कोर्ट से बेहद प्रभावित न्यायमूर्ति लोकुर ने कहा कि 28 जुलाई को होने वाली बैठक में इसकी कार्यप्रणाली तय की जाएगी। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ इसलिए ई-कोर्ट नहीं है, क्योंकि यह पूरी तरह कम्प्यूटरीकृत है, बल्कि इसलिए भी है, क्योंकि इसमें कागज की कहीं जरूरत ही नहीं पड़ेगी। हमने इसके काम करने के पूरे तरीके को कुछ देर समझा और इसे इस्तेमाल करने की कोशिश भी की। यह उपयोग में बेहद सरल है। सभी न्यायाधीशों को इसके इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

9990 रुपये में एचडी एलईडी टीवी देगा फ्रीडम 251

चार डॉलर से भी कम कीमत पर फ्रीडम 251 स्मार्टफोन की पांच हजार इकाइयां अपने उपभोक्ताओं को रवाना करने के बाद नोएडा की यह कंपनी अब एलईडी टीवी बेचने की तैयारी में है।

कितनी होगी कीमत

रिंगिंग बेल्स प्रा. लि. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मोहित गोयल के मुताबिक, कंपनी ने नोएडा का स्पोर्ट्स स्टेडियम बुक किया है, जहां दुनिया का सबसे सस्ता एचडी एलईडी टीवी 9990 रुपये कीमत में लॉन्च किया जाएगा और इस अवसर बॉलीवुड के कई सितारे मौजूद रहेंगे। गोयल ने बताया कि 25 जुलाई को हम नोएडा में एक बड़े समारोह का आयोजन करने जा रहे हैं, जहां आनेवाली फिल्म ढिशूम के सितारे मौजूद रहेंगे। इनमें जॉन अब्राहम, वरुण धवन, जैकलिन फर्नांडीज और अक्षय खन्ना शामिल हैं। वे हमारे साथ मिलकर एचडी एलईडी टीवी को लॉन्च करेंगे। बता दें कि इस बड़े समारोह से पहले गुरुवार को गोयल पश्चिम उत्तर प्रदेश के अपने गृहनगर शामली जिले के गढ़ीपुख्ता में गए और वहां करीब 200 फ्रीडम 251 स्मार्टफोन का वितरण किया।

गोयल के मुताबिक, कंपनी द्वारा हाल में लॉन्च किए गए चार फीचर फोन्स, दो स्मार्टफोन और तीन पॉवर बैंक के लिए 48,000 नए ऑर्डर प्राप्त हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि इन उपभोक्ताओं को अपने-अपने उत्पाद कैश ऑन डिलीवरी के तरीके से मिलेंगे। आनेवाले दिनों में मैं बुकिंग में और भी इजाफा होने की उम्मीद कर रहा हूं। कंपनी ने कहा कि अपने उत्पादों के वितरण के लिए उसने आरवी सोल्यूशन्स प्रा. लि. के साथ करार किया है।

कब से होगी बुकिंग शुरू

31.5 इंच के इन एचडी एलईडी टीवी की बुकिंग 28 जुलाई से शुरू होगी। एलईडी टीवी का वितरण 15 अगस्त से शुरू होगा।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादक : [illegible] Mail : badalkahain@gmail.com